ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

# "महिला सशक्तिकरण विचार –विमर्श" 8 मार्च

**डॉ0 शशि बाला रावत पंवार**

*हिन्दी– विभाग , राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अगस्त्यमुनि , जिला– रुद्रप्रयाग*

नारी तो भाक्ति का रुप हैं,
कभी कन्या हैं, तो कभी देवी हैं,
कभी दुर्गा हैं, तो कभी काली हैं,
मन की मजबूत हैं, पर सहन ील भी हैं
वह भी ख्वाब रखती हैं, उड़ने का,
वो भी परिंदो से ।। (स्वरचित)

महिलाओं के प्रति आदर भाव और सम्मान प्रकट करने के लिए हर वर्ष 8 मार्च को मनाया जाने वाला अंतराश्ट्रीय महिला दिवस एक विषेश दिन है। हमारे देश में महिलायें आज सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक रुप से अनेक उपलब्धियाँ हासिल कर रही हैं। देश और सामाज के उत्थान में महिलाओं ने हमेशा से बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया हैं। चाहे वह 1847 में मिली आजादी देश की महिलाओं ने सदैव भारत का गौरव बढ़ाया है। मेरा मानना है कि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए उन्हैं कुशल बनाना अति आवश्यक हैं। महिला सशक्तिकरण के लिए हमारी सरकार कई प्रकार के अभियान चला रही हैं। प्रधानमंत्री उज्वला योजना, बेटी पढ़ाओ –बेटी बचाओ, सुकन्या समृद्धि योजना, सखी योजना, महिला ई–हाट योजना आदि। देखा जाय तो भारतीय महिला विद्या, बुद्धि भौर्य और चरित्र सभी क्षेत्रों में आदर्श रही हैं।

मुनुस्मृति के अनुसार नारी को कहा गया है– " यत्र नार्यस्तु पुजयन्ते रमन्ते तत्र देवताः" अर्थात् जहाँ नारी को आदर मिलता है, वहाँ देवता बसते हैं। माना जाता हैं कि एक नारी समाज का निर्माण करती हैं, परन्तु यह तथ्य अपने आप में कितना सत्य है कि आज नारी की दयनीय दशा देखकर पता चल जाता हैं कि जब परिवार में कन्या का जन्म होता हैं । तो उसके जन्म पर खुशियाँ नही बल्कि मातम –सा छा जाता हैं। वह नारी जो परिवार की नींव रखती हैं। उसे जन्म से ही बोझ समझा जाता हैं। उसे लड़कों की तरह शिक्षा देने पर अंकुश लगा दिया जाता हैं। कहा जाता हैं कि ज्यादा पढ़कर क्या करना जाना तो पराये घर ही हैं। यह सत्य कहा गया कि " नारी तेरी यही कहानी आँच में दूध, आँखों में पानी,"। यह हमारे समाज की बड़ी विडम्बना तो है। जो वह इस रीति को मानना के लिए बाध्य हैं कि जिस पति

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

द्वारा वह मात्र दहेज की रकम न लाने पर जलाई एवं प्रताड़ित की जाती हैं। जो कि एक घिनौना कार्य है।

जब तक नारी स्वयं समाज में व्याप्त इस अत्याचार के खिलाफ आवाज नही उठायेगी तब तक इससे ऊपर नही पायेंगी समाज का भी दायित्व बनता हैं कि वह आज समाज में नारी पतन व उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाए। नारी को आज चाहिए कि वह नारी समाज में एक आदर्श स्थापित करे। वह पुरुशों से बराबरी कर सके। भारत की महिला इतनी कमजोर नही कि उसे किसी की बैशाखी लेनी पड़े। वह भी उसी ईश्वर की देन हैं । जिसने पुरूश को भी बनाया हैं आज एक आदर्श नारी की छवि प्रस्तुत कर यह स्थापित कर लिया है। कि– हम किसी भी क्षेत्र में पुरुशों से कम नही अपितु श्रेश्ठ हैं। जैसें– अंरुधति राय, सानिया मिर्जा, कल्पना चावला, श्रीमती इंदिरा गाँधी, श्रीमती प्रतिभा पाटिल, श्रीमती एनी बेसेंट, माग्रेट थ्रेटर आदि।

अंतराश्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर यानी 8 मार्च को दुनिया भर में महिलाओं की सुरक्षा और उनके सम्मान का आकलन किया जाता हैं। हमारे देश में प्राचीन काल से ही नारी को सम्मान देने की परंपरा रही हैं। देखा जाय तो भारतीय नारी विद्या, बुद्धि, भौर्य और चरित्र सभी क्षेत्रों में उत्कृश्ट प्रदर्शन के साथ अपना परचम लहराया हैं फिर भी स्त्री–पुरुश के बीच सामाजिक राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भौक्षणिक, परिवारिक, धार्मिक भेदभाव का ग्राफ दिन– प्रतिदिन बढ़ता जा रहा हैं। बाबा साहब अम्बेडकर ने कहा था, कि में किसी समुदाय की प्रगति उस समुदाय में महिलाओं द्वारा हासिल की गई प्रगति से मापता हूँ। यह कथन आज भी प्रासंगिक हैं। हमें यह भी समझना होगा कि आखिर क्यों महिलायें आज भी देश में दोयम दर्जे की नागरिक मानी जाती हैं।

## ''ग्रामीण नारी की समस्यायें''

हमारे प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है। कि यत्र नार्यस्तु पुजयन्ते रमन्ते तत्र देवताः'' यत्रेतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रिया'' यदि हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को आधुनिकीकरण से जोड़ते हैं तो निश्चित रुप से हम राश्ट्र और समाज की प्रतिश्ठा को आगे बढ़ायेंगे, परन्तु जब हम स्त्रियों की जागरुकता की बात करते हैं। भविश्य में आगे बढ़ने की शपथ लेते हैं मगर एक सवाल हमारे मन में ज्यों का त्यों बना रहता हैं । वह हैं ग्रामीण जीवन में यापन करने वाली महिलायें जो रात दिन अपने कामों में व्यस्थ रहती हैं। खेतों में सुबह से भाम तक काम में लगी रहती हैं। दूर–दूर तक जंगलों में जाकर घास व लकड़िया लाती हैं। यहाँ तक अपने बच्चों की परविश भी ठीक तरह से नही कर पाती हैं। हम जो भाहरी महिलायें जो गेंहूँ, चावल, दाल, तेल आदि ,खाद्य– पदार्थ जीवन यापन के लिये खाते हैं। हमने कभी यह भी सोचा हैं कि हमें यह कहाँ से प्राप्त हो रहा हैं । यह ग्रामीण महिलाओं की ही मेहनत हैं। आज जो हम सुन्दर वस्त्र अपने शरीर में जो धारण करते हैं। वह भी दिन –रात फैक्ट्री में काम करने वाली महिलाओं की ही देन हैं। आज क्या ग्रामीण स्त्री के लिए सिर्फ वोट का अधिकार सब कुछ हैं। महिला दिवस पर जब बड़े मंचों पर महिला रचनाकार जन संवाद

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

करती हैं तो उनमें वही महिलायें होती हैं। जो एलीट वर्ग से सम्बन्धित होती हैं जिनका क्षेत्र शहरी व आधुनिक होता हैं। अतः गाँव की महिलाओं का प्रतिनिधित्व हम क्यों भूल जाते हैं। मेरा सवाल यही हैं कि महिला जगत में हम महिला दिवस पर क्यों उन्हें छोड़ दिया जाता हैं। मताधिकार में बराबरी का दर्जा पाकर खड़ी किसान– मजदूर स्त्रियाँ क्यों हमारी मजलिस में भाग नहीं ले सकती। इसलिए कि हमारी जैसी 'लैंग्वेज' यानी भाशा उनके पास नही हैं। हमारे जैसा ड्रैसिंग सेंस उनके पास नहीं हैं। अतः हम एक मनमौजी होकर उन्हें मंच भले न दे पायें। मगर इनता हमें याद रखना चाहिये कि ग्रमीण स्त्री का जीवन एक तपा हुआ होता हैं। उसके जो अपने अनुभव बड़े होते हैं। वह जिन्दगी में ढले होते हैं क्योंकि उसके संघर्श बड़ें विकट होते हैं जो कुछ आप और हम खाते हैं। पीते व पहनते हैं। उनको पैदा करने का हुनर उनके पास होता हैं। हमें ग्रामीण महिला को अपना स्त्री– विमर्श सिखाना नही हैं, बल्कि उससे सीखना जरुरी हैं।

महिलाओं के कौशल –विकास की दिशा में हम सबको गंभीरता से काम करना हैं। इस काम में कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय और मानव संसाधन विकास मंत्रालय परस्पर सहयोगी है। सभी मंत्रालय पूरी– जिम्मदारी से अपनी भूमिका निभा रहे हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति के पास कोई न कोई अद्वितीय कौशल होता हैं। बस आवश्यक्ता होती हैं कि उस कौशल को पहचानने का एक तंत्र विकसित किया जाय। हमारी यही कोशिश है कि देश की महिलायें अनेक क्षेत्रों में अपना कौशल तलाशते हुए प्रशिक्षित हो जायें और रोजगार के अवसर प्राप्त करें।

## संदर्भ ग्रंथ–

i. महिला सशक्तिकरण का विकास– डी0आर.0 सचदेव– पृश्ठ सं0–45
ii. साहित्य और नारी की भूमिका– पवन कुमार मिश्रा– पृश्ठ सं0– 66
iii. महिला उत्पीड़न– जिम्मेदार कौन–रविन्द्र नाथ मुखर्जी– पृश्ठ सं–42
iv. मानव समाज– किंग्सले डेविस – पृश्ठ सं0– 72